CBSE Test Paper 03

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

1. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

   पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान्।
   निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान।।

   i. सारा संसार किसे भूल रहा है, और क्यों?
   ii. निरपख होकर भजन करनेवालों को कवि ने संत सुजान क्यों कहा है?
   iii. इस दोहे के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

2. कबीर के अनुसार मोट चून और मैदा का प्रतीकार्थ क्या है, तथा मोट चून कब मैदा बन जाता है?

3. कबीर ने संसार को स्वान रूप क्यों कहा है?

4. कबीर की साखियों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कबीर सच्चे समाज सुधारक थे?

5. कबीर के अनुसार मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?

6. 'निरपख होई के हरि भजे सोई संत सुजान' के माध्यम से कबीर ने क्या सीख दी है?

CBSE Test Paper 03

Ch-7 साखियाँ एवं सबद

Answer

1. i. सारा संसार धर्म के पक्ष-विपक्ष के चक्कर में पड़कर संसार में आने का अपना वास्तविक उद्देश्य भूल गया है। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसे अपने पक्ष में अच्छाई और दूसरे में बुराई नज़र आती है। इसके फेर में पड़कर वह भ्रमित हो गया है।
   ii. निरपख होकर भजन करनेवालों को कवि ने संत सुजान इसलिए कहा है क्योंकि वे मत-मतांतर, संप्रदाय और पक्ष-विपक्ष के चक्कर में नहीं पड़ते हैं। वे किसी प्रकार के भ्रम में पड़कर प्रभु को नहीं भूलते हैं और प्रभुभक्ति में लीन रहते हैं।
   iii. इस दोहे के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि मनुष्य को पक्ष-विपक्ष अर्थात हिंदू-मुसलमान के चक्कर में न पड़कर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए।
2. मोट चून मनुष्य के अंतर्मन में स्थित लोभ, माया, छल-कपट आदि बुराइयों की तथा मैदा प्रभु भक्ति से प्राप्त आनंद का प्रतीक है। जब मनुष्य के मन से राम-रहीम का भेदभाव मिट जाता है और उसके लिए काबा-काशी में कोई अंतर नहीं रह जाता तब वह सच्ची प्रभु भक्ति के आनंद को अनुभव करने लगता है | इस प्रकार मोट-चून मैदा बन जाता है |
3. जिस प्रकार हाथी को अपनी राह पर चलते हुए देखकर कुत्ते भौंकना शुरू कर देते हैं और हाथी बेपरवाह होकर अपने रास्ते पर निरंतर चलता रहता है , उसी प्रकार भक्ति और ज्ञान प्राप्ति में लगे हुए साधकों को देखकर संसार उसकी निंदा करने लगता है | ऐसे लोगों को संसार की परवाह न करते हुए अपने लक्ष्य प्राप्ति में लगे रहना चाहिए | संसार की इसी प्रवृत्ति को देखकर कबीर ने संसार को स्वान रूप कहा है |
4. कबीर ने अपनी साखियों के द्वारा समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों तथा बुराइयों परकड़ा प्रहार किया है।उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों की पूजा पद्धति पर व्यंग्य करते हुए साम्प्रदायिकता को अपना लक्ष्य बनाया है | उन्होंने मनुष्य को ईश्वर की सर्व्वयापकता का बोध कराते हुए उसकी एकात्मक भक्ति पर बल दिया है | उन्होंने काशी, कैलाश की यात्रा तथा योग बैराग्य जैसी क्रियाओं के माध्यम से प्रभु को खोजने के प्रयास को निरर्थक बताते हुए उसे अपने ही भीतर खोजने की सलाह दी है। इसके अलावा कबीर ने हिंदू-मुसलमानों की एकता पर विशेष जोर दिया। इससे पता चलता है कि वे सच्चे समाज सुधारक थे।
5. मनुष्य ईश्वर को निम्नलिखित स्थानों पर ढूँढ़ता फिरता है-
   i. मनुष्य ईश्वर को मंदिर-मस्जिद में खोजता रहता है |
   ii. वह उसे काबा-कैलाश जैसे तीर्थ स्थानों में ढूँढता रहता है |
   iii. मनुष्य ईश्वर को योग-साधना , जप-तप ,वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक कर्मकांडों में खोजता है।
6. इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने मनुष्य को यह सीख दी है कि उसे धर्म-संप्रदाय के पक्ष में नहीं पड़ना चाहिए | ये तो मनुष्य-मनुष्य में भेदभाव उत्पन्न करता है | ईश्वर एक है और सब उसी की संतान हैं इसलिए इनके चक्कर में न पड़कर निष्पक्ष भाव से प्रभु का भजन करना चाहिए।